जब ख़ुदा ने ही बनाया हर किसी को,

फिर खड़ी क्यूँ बीच में दीवार है।

पता -उर्दू *बाज़ार लेन, सराय, भागलपुर (बिहार) – 812002*

मो.: 9199003205

बलजीत सिंह की ग़ज़ल

यार अपनी पीर भी।

अपनी ही जागीर है।

अश्क़ से इसको पढ़ो।

दर्द की तहरीर है।

प्यासे रहकर ही सुनो।

प्यास की तक़रीर है।

सर चढ़े तो क्या कहूँ?

सरफ़िरी तक़दीर है।

कच्चे धागे सी लगे।

ज़िन्दगी जंज़ीर है।

हाँसी (हिसार) , हरियाणा

तान्या सिंह की ग़ज़ल

बहुत लोग बारिश के आते हुए
रो लेते हैं आँखें बिछाते हुए

थकन इतनी है ज़िन्दगी से उसे
है मायूसी ज़िंदा बताते हुए

बहुत चोट लगती है आवाज़ को
दिवारों में रस्ता बनाते हुए

मेरा दिल नहीं लग रहा जीने में
तेरा साथ झूठा निभाते हुए

मज़ा लेना ही पड़ता है जख़्म का
दवा शायरी को बनाते हुए

तेरी बददुआ का असर इतना है
मुझे डर है पौधा लगाते हुए

गोरखपुर - उत्तर प्रदेश